International Journal of Multidisciplinary Allied Research Review and Practices
IJMARRP ISSN No: 2455-1570 (Volume 3, Issue - VIII, August 2016)

'कथाक्रम' पत्रिका का साहित्य में योगदान

अरविन्द कुमार, प्रो0 डा0 पवन अग्रवाल
शोधार्थी, निर्देषक

हिन्दी विभाग

श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टीबरेवाला विश्वविद्यालय झुंझुनू , राजस्थान

प्रस्तावना

मनुष्य एक सामजिक प्राणी है वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए समाज में रहता है। जिस समाज में वह रहता है, वह उस समाज की अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करना चाहता है। इसलिए वह सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक धार्मिक आदि बुनाईयां को पत्रकारिता के माध्यम से पर्दाफाश करने का प्रयत्न करता है। इसलिए उसे पत्रकारिता का सहारा लेना पड़ता है।

''पत्रकारिता अंग्रेजी के 'जर्नलिस्म' (Jounalism) का अनुवाद है। Journal का अर्थ है– 'दैनिक'। प्रारम्भ में सरकारी कार्य के दैनिक विवरणों एंव बैठकों की कार्यवाहियों को Journal में रखा जाता था। आगे चलकर ये विवरण सार्वजनिक होते गये और 20वीं सदी तक आते–आते विद्वतापूर्ण लेखों एवं गम्भीर राजनीतिक आलोचनाओं को इसमें समाहित कर लिया गया। इस प्रकार समाचारों पत्रिकाओं के सम्पादन–लेखन को पत्रकारिता या जर्नलिज्म कहा जाने लगा।

इस दृष्टि से पत्रकारिता के सन्दर्भ में 'वेब्सटर्स डिक्सनरी' ने इसका संक्षेपीकरण करते हुए लिखा है–

'समाचारों के प्रकाशन, लेखन, सम्पादन का व्यवसाय ही पत्रकारिता है।''[1]

कृष्ण बिहारी मिश्र के शब्दों में–:

''जो अपने युग और अपने सम्बन्ध में लिखा जाए वहीं पत्रकारिता है।''[2]

किसी भी घटना को तत्कालीन किसी संचार माध्यम द्वारा जनता के सम्मुख लाना ही पत्रकारिता का कार्य है। आज के युग में पत्रकारिता का अर्थ मात्र कोई लेख लिखना नहीं है अथवा फिर किसी सूचना या समाचार का प्रसारण मात्र नहीं है बल्कि सूचना तथा समाचार को उसकी तह तक जाकर सत्य रूप में निकाल कर लाना, आकर्षक शीर्षक के साथ रोचक जानकारी पूर्ण विवरण के साथ लिखना आकर्षक विज्ञापन प्रस्तुत करना ही पत्रकारिता है।

पत्रकारिता समाज की सीमाओं पर पड़ने वाली एक किरण की भॉति है। यह प्रकाश सामाजिक जीवन में प्रतिष्ठित होकर उसके अर्न्तग में छिपे अंधकार की परत को हटाता है। समाज के सम्मुख सच्चाईयों को उजागर करता है। यह दोनों के बीच के सम्बन्धों की सुदृढ़ कड़ी है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों की जानकारी शासन को देती है तथा शासन की कार्यवाही की जानकारी जनता को देती है। पत्रकारिता राष्ट्र को जनता से और जनता को राष्ट्र से जोड़ती है इससे यह अवगत हो जाता है कि पत्रकारिता दोनों एक दूसरे के लिए महत्वपूर्ण है।

साहित्यिक पत्रिकाएॅ सामाजिक व्यवस्था के लिए चतुर्थ स्तम्भ का कार्य करती है और अपनी विचार रखने के लिए साफ सुथरा वातावरण तैयार करती हैं। अमानवीय व्यवहार अन्याय, अत्याचार, शोषणा किसी भी प्रकार की ज्यादती का डटकर विरोध करने के लिए पत्रिकाओं के माध्यम से आवाज बुलंद की जा सकती है। हिन्दी के विभिन्न आंदोलन और सहित्यिक प्रवृत्तियों एंव सामाजिक गतिविधियों के सक्रिय करने में पत्रिकाओं की अहम भूमिका रही है।

''भारतेन्दु हरीश्चन्द्र का हिन्दी पत्रकारिता में महत्वपूर्ण स्थान है सन्–1868 में भारतेन्दु जी ने साहित्यक पत्रिका कविवचन सुधा का प्रवर्तन किया। समाज में राष्ट्रीय चेतना के जागरण तथा उसमे सामाजिक ज्वलत प्रश्नों व समस्याओं के प्रति जागरूकता लाने तथा सामाजिक एवं धार्मिक सुधारों को गतिमान करने के लिए इन पत्रिकाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की हैं। इस काल की पत्रिकाओं ने हिन्दी भाषा के सुधार के क्षेत्र में अमूल्य योगदान दिया भारतेन्द्र जी ने छः पत्रिकायें प्रकाशित की हैं। इनमेंकविवचन सुधा, चरणादि, चन्द्रिका, हरिश्चन्द्र मैगजीन आदि प्रमुख हैं। कानुपर से मासिक ब्राह्मण' तथा दैनिक 'भारतदेय' समाचार पत्र निकलते थे। मिर्जापुर से मासिक आनन्द कादम्बिनी, लाहौर, से इन्दु मासिक पत्र निकलते थे।''[3]

इसके बाद द्विवेदी युग (1900–1918 ई0) आता है। 1900ई0 में इलाहाबाद में मासिक पत्रिका 'सरस्वती' का प्रकाशन आरम्भ हुआ सन् 1903 ई0 में महावीर प्रसाद द्विवेदी के सम्पादक होने से इसमें चार चॉद लग गए।

''इसी समय बनारस से मासिक पत्रिका सुदर्शन का प्रकाशन देवकी नन्दन खत्री एवं माधव प्रसाद मिश्र के सहसम्पादन में होता था। काशी से मासिक पत्रिका इन्दु का प्रकाशन होता था।''[4]

इन पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन से केवल साहित्य जगत ही नहीं ऋणी है बल्कि इनके द्वारा राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक योगदान समय–समय पर मिलता रहा है। विशेषकर सरस्वती के प्रकाशन से तत्कालीन समाज में घटित होने वाली सभी घटनाओं का लेखा–जोखा इसमें प्रकाशित होता था और विशेषकर साहित्यिक क्षेत्र में द्विवेदी जी ने व्याकरण एवं खड़ी बोली को इसमें एक नई दिशा एवं दशा का बीजारोपण कर एक नया प्रतिमान स्थापित किया।

छायावाद काल में पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रगति के साथ उसमें परिपक्वता का समावेश होता चला गया।

''सरस्वती' एवं 'मर्यादा' की अपनी निरन्तरता तो कायम रही थी साथ ही 'चॉद', 'माधुरी', 'प्रभा', 'साहित्य', 'सन्देश', 'विशालभारत,'सुधा,' कल्याण, 'हॅस, 'आदर्श', 'माजी', 'समन्वय' 'सरोज', आदि मासिक, पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ।''[5]

तत्तकालीन समय में कथा साहित्य में हलचल मचा देने वाली पत्रिका 'हॅस' का प्रकाशन बनारस से मुंशी प्रेमचन्द्र जी कर रहे थे, इसमें उच्चकोटि के साहित्यिक कवितायें, आलोचनायें निबन्ध और साहित्य की अन्य सभी विधाओं को स्थान दिया जाता था। इसी समय राष्ट्रीय भावना, नारी समस्या एवं हिन्दु–मुस्लिम एकता की समस्या एवं साहित्यिक गतिविधियों को उजागर करने का कार्य मासिक पत्र 'आदर्श' और 'माजी' में हो रहा था।

'मतवाला' का प्रकाशन कलकत्ता से शिवपूजन एवं निराला जी के सम्पादकत्व में सम्पन्न हो रहा था। यह पत्र ब्रिटिश सरकार की नीतियों को व्यंग्यात्मक रूप से लोगो तक अपनी बात पहॅचाने का कार्य करता था साथ ही साहित्यिक एवं राजनीतिक सामाजिक विषयों पर भी रचनाओं का प्रकाशन करता था।

छायावादोत्तर पत्रकारिता अपनी निरन्तर विकास धारा एवं घटनाचक्र की दृष्टि से नित्य नये रूप ग्रहण करती जा रही थी। कुछ पत्र–पत्रिकायें छयावाद की समाप्ति के बावजूद प्रकाशित हो रही थीं।

''आज वीर अर्जुन, सैनिक, हिन्दी मिलाप, हिन्दुस्तान, आर्यावर्त, चौथा संसार, कर्मवीर, कथाक्रम आदि पत्रिकायें छायावादोत्तर से लेकर आज तक साहित्य की सेवा कर रही है।''[6]

''कथाक्रम' एक त्रैमासिक लघु पत्रिका है। इस लघु पत्रिका का विकास 'कथाक्रम' के आयोजन से जुड़ा–हुआ है। हिन्दी कथा साहित्य पर केन्द्रित 'अखिल भारतीय आयोजन' वर्ष 1990 में आजमगढ़ से आरम्भ हुआ था। इस पत्रिका का प्रकाशन सन् 1996 में लखनऊ से प्रारम्भ हुआ। इसके सम्पादक वरिष्ठ कथाकार एवं आई0पी0एस0 अधिकारी 'श्री शैलेन्द्र सागर' जी हैं। यह पत्रिका साहित्यिक पत्रिकाओं में अपना प्रमुख स्थान रखती है।''[7]

वरिष्ठ साहित्यकार श्रीलाल शुक्ल, मुद्राराक्षस, रवीन्द्र वर्मा, कान्तानाथ, वीरेन्द्र यादव, अखिलेश, नामवर सिंह आदि रचनाकारों ने इस साहित्यिक पत्रिका में अपना योगदान दिया है।

'कथाक्रम' पत्रिका का उद्देश्य समाज में व्याप्त गरीबों और दलितों का शोषण, साम्प्रदायिक हिंसा, स्त्रियों के साथ अन्याय आदि समाज में व्याप्त इन बुराइयों को दूर कर समाज को एक सजग, जागरूक और सशक्त राष्ट्र बनाने के साथ साथ समाज को नयी दिशा प्रदान करना है। यह पत्रिका कथा साहित्य और कला संस्कृति को मंच प्रदान करती है। अच्छी कहानियों कविताओं, लेखों, लघुकथाओं आदि को प्रकाशित कर पाठकों के समक्ष उपस्थित करके साहित्य की सेवा करता है।

इस साहित्यिक पत्रिका के नाम से प्रतियोगितायें आयोजित की जाती है जिसमें श्रेष्ठ और उत्कृष्ठ साहित्यकारों की रचनाओं को सम्मानित कर पुरस्कार दिया जाता है।

उपर्युक्त विवरण का अनुशीलन करने के उपरान्त यह स्पष्ट हो जाता है कि यह पत्रिका अपने विकास के साथ प्रगति के पथ पर अग्रसर है तथा साहित्य में निरन्तर अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है।

1. पत्रकारिता सिद्धान्त और प्रयोग, रोनेशचन्द्र त्रिवारी, संगमील पब्लिकेशन, लाहौर–2000।
2. कृष्ण बिहारी मिश्र, हिन्दी पत्रकारिता प्राक्कथन पृ0–15 ।
3. भारतेन्दु युगीन हिन्दी पत्रकारिता, डा0 बंशीधर लाल, साहित्य भवन इलाहाबाद 1996।
4. पूर्ववत
5. पूर्ववत
6. पूर्ववत
7. लखनऊ की हिन्दी दैनिक समाचार पत्रकारिता और नवजीवन–शोधार्थी क्षमा दीक्षित पृ0सं0 127–129।